egkRek xka/kh vUrjjk"Vªh; fgUnh fo'ofo|ky;] o/kk ¼egkjk"Vª½
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatama Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(A Central University Established by Parliament by Act No.3 of 1997)
नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

जि□ज्ञासा और प्रश्नाकुलता विद्यार्थी की मूल पहचान : प्रो. अक़ील रिज़वी
वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समझ का विकास विश्वविद्यालय की प्राथमिकता - प्रो. संतोष भदौरिया

विद्यार्थियों को अध्ययन के दौरान सचेत रहना बहुत ज़रूरी है। देश और दुनिया की तमाम बहसों से मुखातिब छात्र-छात्राएं और शिक्षक ही किसी संस्थान को रौशन करती हैं। अदब की समझ प्रत्येक विषय के विद्यार्थी को होना भी जरूरी है। साहित्य और कला ही आपको संपूर्ण मनुष्य बनाने में मदद करते हैं। हिंदी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद केंद्र ने बहुत कम समय में अपनी मुकम्मल पहचान इस अदबी शहर और मुल्क में कायम की है। इसके लिए वर्तमान कुलपति को भी मैं इस मौके पर बधई देता हूं। उक्त बातें उर्दू के ख्यातनाम आलोचक प्रोफ़ेसर अक़ील रिज़वी ने कहीं। वे विश्वविद्यालय के नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं के लिए आयोजि□त सत्रारंभ कार्यक्रम में बोल रहे थे।

इलाहाबाद केंद्र के प्रभारी प्रोफेसर संतोष भदौरिया ने कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र एवं विश्वविद्यालय परिवार की ओर से नवागन्तुकों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय एवं इलाहाबाद केंद्र की स्थापना एवं उसके बुनियादी सरोकारों की जानकारी साझा की। उन्होंने केंद्र में चल रहे पाठ्यक्रमों एवं अध्यापन प्रविधियों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि छात्र-छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं समझ का विकास ही विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है। प्रो. भदौरिया ने छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों के सम्मिलित प्रयासों से केंद्र को आगे बढ़ाने के लिए सहयोग मांगा। हिंदी के वरिष्ठ प्रोफेसर सुधांशु मालवीय ने कहा कि अपने विषय के अलावा अन्य अनुशासनों की जानकारी आज विद्यार्थियों को होनी चाहिए तभी शिक्षा की सार्थकता सिद्ध होगी। शिक्षा का बुनियादी सरोकार

एक अच्छे इंसान की निर्मिति भी है। हिंदी के युवा कथाकार श्री रणविजय सिंह सत्यकेतु ने नवप्रवेशित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी को एक सजग नागरिक की भूमिका का निर्वाह करना चाहिए। विद्यार्थी ही युवा रचनात्मकता को सामने लाने वाला सर्वाधिक उपयुक्त वर्ग है। संवाद की प्रवृत्ति उसके ज्ञानार्जन के मूल में होनी चाहिए। इलाहाबाद केंद्र में कार्यरत डॉ. अमरेन्द्र कुमार शर्मा एवं डॉ. विधु खरे दास ने भी केंद्र में संचालित विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों की जानकारी दी और अपने अनुभव साझा किए। डॉ. सालेहा ज़र्रीन, डॉ अनुपमा राय, सुश्री सूर्या ई.वी., श्री आशुतोष श्रीवास्तव सहित इलाहाबाद केंद्र के समस्त गैर शैक्षणिक कर्मी श्री मनोज सिंह, कु. रश्मि एवं श्री शिवेंद्र धर शुभारंभ कार्यक्रम में शामिल रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सपना सिंह ने किया। कक्षा प्रतिनिधि के रूप में एम.फिल. हिंदी साहित्य के शोध छात्र श्री शिवम सिंह, एम.ए. हिंदी की छात्रा सुश्री प्रियंका, एम.एस.डब्ल्यू की छात्रा सुश्री अनुपमा, एवं उर्दू के छात्र श्री पीयूष कुमार ने अपने अनुभव एवं केंद्र की गतिविधियों को साझा किया। सत्रारंभ समारोह में बड़ी संख्या में छात्र/छात्राएं शामिल हुए।

प्रस्तुति
प्रभारी
इलाहाबाद केंद्र